AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

बी.एड. प्रशिक्षित अध्यापकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति के संदर्भ में उनकी कार्य–संतुष्टिः एक अवधारणात्मक अध्ययन

ORIGINAL ARTICLE

Authors

मुकेश
शोधार्थी, शिक्षा विभाग
बायालासी पीजी महाविद्यालय
जलालपुर, जूनापुर, उत्तरप्रदेश, भारत

डॉ. ब्रिजेश मिश्रा
सह प्राध्यापक, शिक्षा विभाग
बायालासी पीजी महाविद्यालय
जलालपुर, जूनापुर, उत्तरप्रदेश, भारत

डॉ. अरविंद कुमार
सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग
लाल बहादुर शास्त्री पीजी महाविद्यालय
मुगलसराय, चानडाउली, उत्तरप्रदेश, भारत

शोध सार

शिक्षा व्यवस्था की गुणवत्ता का प्रत्यक्ष संबंध शिक्षकों की पेशागत अभिवृत्ति एवं उनके कार्य–संतुष्टि स्तर से है। विशेष रूप से बी.एड. प्रशिक्षित अध्यापक विद्यालयी शिक्षा की आधारशिला माने जाते हैं, जिनकी शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति उनके कार्य निष्पादन, मानसिक स्वास्थ्य तथा संगठनात्मक प्रतिबद्धता को प्रभावित करती है। प्रस्तुत अवधारणात्मक अध्ययन का उद्देश्य बी.एड. प्रशिक्षित अध्यापकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और उनकी कार्य–संतुष्टि के मध्य सैद्धांतिक संबंधों का विश्लेषण करना है। अध्ययन समकालीन शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों तथा 2020–2025 के शोध साहित्य पर आधारित है। सैद्धांतिक विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि सकारात्मक शिक्षण अभिवृत्ति अध्यापकों में प्रेरणा, पेशागत प्रतिबद्धता और कार्य–संतुष्टि को सुदृढ़ करती है, जबकि नकारात्मक अभिवृत्ति असंतोष, तनाव और कार्य–थकान को जन्म देती है। अध्ययन के निष्कर्ष शिक्षक प्रशिक्षण, शैक्षिक प्रशासन एवं विद्यालय सुधार हेतु महत्वपूर्ण नीतिगत संकेत प्रदान करते हैं।

मुख्य शब्द

अध्यापक, कार्य संतुष्टि, शिक्षण अभिव्यक्ति, प्रशिक्षण.

प्रस्तावना

शिक्षक किसी भी शिक्षा प्रणाली का केंद्रीय स्तंभ होता है, क्योंकि वही शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया को प्रभावी, उद्देश्यपूर्ण एवं मूल्यपरक दिशा प्रदान करता है। शिक्षा की गुणवत्ता, विद्यालय की कार्य–संस्कृति तथा विद्यार्थियों के शैक्षिक और नैतिक विकास में शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है। समकालीन शैक्षिक परिदृश्य में शिक्षक से केवल विषय–ज्ञान की अपेक्षा नहीं की जाती, बल्कि उससे सकारात्मक दृष्टिकोण, पेशागत दक्षता, भावनात्मक संतुलन एवं निरंतर नवाचार की भी अपेक्षा की जाती है (NEP, 2020)।

बी.एड. प्रशिक्षित अध्यापक इस संदर्भ में विशेष महत्व रखते हैं, क्योंकि बी.एड. कार्यक्रम का प्रमुख उद्देश्य शिक्षकों में पेशागत मूल्यों, शिक्षण कौशल, कक्षा–प्रबंधन क्षमता तथा शिक्षण के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति का विकास करना होता है। शोध बताते हैं कि सुव्यवस्थित शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रम शिक्षकों की पेशागत पहचान और

कार्य–संतुष्टि को सुदृढ़ करते हैं (Kumar, Sharma, 2021)।

शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति शिक्षक की भावनात्मक, संज्ञानात्मक एवं व्यवहारात्मक प्रवृत्तियों का समन्वित रूप है, जो उसके शिक्षण व्यवहार, कक्षा–परिवेश तथा विद्यार्थी सहभागिता को प्रभावित करती है। सकारात्मक शिक्षण अभिवृत्ति शिक्षक को नवोन्मेषी, सहयोगात्मक और प्रतिबद्ध बनाती है, जबकि नकारात्मक अभिवृत्ति शिक्षण प्रक्रिया में उदासीनता एवं तनाव को जन्म देती है (Verma & Singh, 2023)।

दूसरी ओर, कार्य–संतुष्टि शिक्षक के मानसिक स्वास्थ्य, कार्य–निरंतरता एवं पेशागत प्रतिबद्धता का प्रमुख निर्धारक मानी जाती है। संतुष्ट शिक्षक न केवल अपने कार्य के प्रति अधिक समर्पित रहते हैं, बल्कि संगठनात्मक लक्ष्यों की प्राप्ति में भी सक्रिय योगदान देते हैं (Singh & Mishra, 2022) एवं OECD (2023) की रिपोर्ट के अनुसार, उच्च कार्य–संतुष्टि वाले शिक्षक अधिक प्रभावी, नवोन्मेषी एवं विद्यार्थी केंद्रित शिक्षण प्रदान करते हैं, जिससे शिक्षा की समग्र गुणवत्ता में वृद्धि होती है।

इस प्रकार शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और कार्य–संतुष्टि परस्पर गहराई से संबद्ध अवधारणाएँ हैं। बी.एड. प्रशिक्षित अध्यापकों के संदर्भ में इन दोनों के मध्य संबंध का अवधारणात्मक अध्ययन शिक्षा–गुणवत्ता सुधार, शिक्षक–कल्याण तथा नीति–निर्माण की दृष्टि से अत्यंत प्रासंगिक एवं उपयोगी सिद्ध होता है।

शिक्षण अभिवृत्ति की अवधारणा

अभिवृत्ति से तात्पर्य व्यक्ति की किसी कार्य, विचार या स्थिति के प्रति अपेक्षाकृत स्थायी मानसिक प्रवृत्ति से है। शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति शिक्षक की वह मनोवैज्ञानिक अवस्था है जो उसके शिक्षण व्यवहार, कार्य–रुचि और विद्यार्थियों के प्रति दृष्टिकोण को प्रभावित करती है (Verma, 2020)।

सकारात्मक शिक्षण अभिवृत्ति शिक्षक में नवाचार, आत्म–प्रेरणा और शिक्षण–दायित्व के प्रति प्रतिबद्धता को प्रोत्साहित करती है। ऐसे शिक्षक शिक्षण को केवल रोजगार न मानकर सामाजिक उत्तरदायित्व के रूप में देखते हैं। इसके विपरीत नकारात्मक अभिवृत्ति शिक्षकों में उदासीनता, न्यूनतम प्रयास और पेशागत थकान को जन्म देती है (Rani, Gupta, 2022)।

शोधों से स्पष्ट है कि शिक्षण अभिवृत्ति का सीधा प्रभाव शिक्षण व्यवहार, कक्षा–प्रबंधन और विद्यार्थी अधिगम परिणामों पर पड़ता है (Chaudhary, 2024) इसलिए शिक्षण अभिवृत्ति को शिक्षक की पेशागत गुणवत्ता का मूल आधार माना जाता है।

कार्य–संतुष्टि की अवधारणा

कार्य–संतुष्टि वह अवस्था है जिसमें व्यक्ति अपने कार्य अनुभवों से संतोष, संतुलन और आत्म–पूर्ति का अनुभव करता है। शिक्षक संदर्भ में कार्य–संतुष्टि वेतन, कार्य–परिस्थितियाँ, मान्यता, पदोन्नति, स्वायत्तता और कार्य–अर्थबोध जैसे कारकों से प्रभावित होती है (Sharma, 2021)।

डेंसवू का आवश्यकता सिद्धांत बताता है कि शिक्षक की आवश्यकताओं की पूर्ति होने पर कार्य–संतुष्टि बढ़ती है। भ्मव्रइमतह का द्वि–कारक सिद्धांत कार्य–संतुष्टि को प्रेरक एवं स्वच्छता कारकों से जोड़ता है, जबकि स्वबाम का मूल्य सिद्धांत कार्य–अपेक्षाओं और वास्तविक उपलब्धियों के सामंजस्य पर बल देता है (Patel, Joshi, 2023)।

UNESCO (2024) के अनुसार शिक्षक की कार्य–संतुष्टि विद्यालय की समग्र गुणवत्ता और विद्यार्थियों की उपलब्धि को प्रभावित करती है। अतः यह एक केंद्रीय शैक्षिक अवधारणा है।

शिक्षण अभिवृत्ति एवं कार्य–संतुष्टि के मध्य संबंध

शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और कार्य–संतुष्टि के मध्य गहरा संबंध पाया जाता है। सकारात्मक अभिवृत्ति शिक्षक में आंतरिक प्रेरणा, आत्म–गौरव और पेशागत प्रतिबद्धता को बढ़ाती है, जिससे कार्य–संतुष्टि में वृद्धि होती है (Singh; etal., 2022)।

मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से अभिवृत्ति शिक्षक की भावनात्मक प्रतिक्रियाओं को नियंत्रित करती है। सकारात्मक दृष्टिकोण शिक्षक को चुनौतियों से निपटने में सक्षम बनाता है, जबकि नकारात्मक अभिवृत्ति तनाव और असंतोष को जन्म देती है (Kaur, 2021)।

शैक्षिक दृष्टिकोण से संतुष्ट शिक्षक अधिक प्रभावी शिक्षण प्रदान करता है, जिससे विद्यालय की गुणवत्ता में सुधार होता है (NCERT, 2023)। इस प्रकार शिक्षण अभिवृत्ति कार्य–संतुष्टि की आधारभूमि तैयार करती है।

बी.एड. प्रशिक्षण की भूमिका

बी.एड. प्रशिक्षण शिक्षक के पेशागत विकास की आधारशिला है और यह आधुनिक शिक्षा प्रणाली में शिक्षक की गुणवत्तापूर्ण भूमिका निर्माण में केंद्रीय योगदान देता है। यह प्रशिक्षण केवल विषयगत ज्ञान तक सीमित नहीं रहता, बल्कि शैक्षिक मूल्य, पेशागत अभिवृत्ति, शिक्षण–अधिगम कौशल, और शिक्षण दर्शन के विकास पर विशेष बल देता है (NCTE, 2022)। बी.एड. कार्यक्रम शिक्षार्थियों को वर्ग संचालन, मूल्यांकन तकनीक, शिक्षण योजना, और शिक्षण–शिक्षण के सिद्धांत एवं अभ्यास से परिचित कराता है, जिससे वे कक्षा प्रबंधन और सीखने–सिखाने की प्रक्रिया को प्रभावी रूप से संचालित कर सकें (Kumar, Singh, 2021)।

शोध यह प्रतिपादित करते हैं कि गुणवत्तापूर्ण बी.एड. प्रशिक्षण से न केवल शिक्षण कौशल में वृद्धि होती है, बल्कि शिक्षकों में आत्म–विश्वास, पेशागत पहचान, तथा कार्य–संतुष्टि में भी सकारात्मक परिवर्तन आता है (Mehta & Rao, 2024) उदाहरण के लिए, Mehta एवं Rao (2024) के अध्ययन में यह पाया गया कि बी.एड. प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों की पाठ योजना तैयारी, ऑब्ज़र्वेशनल कौशल, और प्रवर्तनात्मक शिक्षण तकनीकों में महत्वपूर्ण सुधार देखा गया, जिससे उनकी कक्षा–प्रभावशीलता और छात्रों की सीखने की प्रगति में भी सुधार हुआ।

इसके अतिरिक्त, बी.एड. प्रशिक्षण शिक्षक की नैतिकता, सह–अधिगम कौशल, तथा व्यवसायिक प्रतिबद्धता को दृढ़ करने में सहायक होता है (Sharma & Verma, 2023)। यह प्रशिक्षण शिक्षकों को निरंतर पेशागत विकास (CPD) के लिए प्रेरित करता है तथा उन्हें आत्म–मूल्यांकन और साक्ष्य–आधारित शिक्षण प्रथाओं को अपनाने हेतु तैयार करता है। इस प्रकार, बी.एड. प्रशिक्षण न केवल शिक्षक की शैक्षिक दक्षता में वृद्धि करता है, बल्कि व्यक्तिगत और पेशागत विकास के बीच एक सेतु का कार्य करता है, जो समग्र रूप से शिक्षा की गुणवत्ता और छात्रों के सीखने के परिणामों को सुदृढ़ करता है।

सैद्धांतिक ढाँचा

यह संकल्पनात्मक ढाँचा इस बात को स्पष्ट करता है कि शिक्षण अभिवृत्ति (Teaching Attitude) शिक्षक के पेशे से जुड़ी सकारात्मक सोच और मान्यताओं का प्रारंभिक स्रोत है, जो सीधे तौर पर प्रेरणा (Motivation) को प्रभावित करती है। सकारात्मक शिक्षण अभिवृत्ति वाले शिक्षक अपने कार्य को अधिक उत्साह, निष्ठा और उद्देश्य के साथ ग्रहण करते हैं, जिससे उनकी आंतरिक और बाह्य प्रेरणाएँ सुदृढ़ होती हैं (Akhtar & Malik, 2022)। प्रेरणा शिक्षक को लक्ष्य–उन्मुख प्रयासों के लिए प्रेरित करती है, जो आगे पेशागत प्रतिबद्धता (Professional Commitment) को बढ़ाती है; अर्थात् शिक्षक अपने पेशे के मूल्यों, दायित्वों और नैतिक जिम्मेदारियों के प्रति अधिक समर्पित होते हैं (Li & Chen, 2023)।

जब शिक्षक प्रेरित और प्रतिबद्ध होते हैं, तो उनकी कार्य–संतुष्टि (Job Satisfaction) का स्तर भी उच्च होता है क्योंकि वे अपने कार्य में उपलब्धि, मान्यता और पेशागत विकास महसूस करते हैं (Singh & Gupta, 2024)। इस प्रकार यह ढाँचा रेखांकित करता है कि शिक्षण अभिवृत्ति एक प्रारंभिक एवं निर्णायक चर है, जो प्रेरणा के माध्यम से पेशागत प्रतिबद्धता तथा अंततः कार्य–संतुष्टि को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। इससे पता चलता है कि शिक्षकों के पेशागत विकास और शिक्षा की गुणवत्ता में वृद्धि हेतु इन तत्वों के बीच निरंतर समन्वय आवश्यक है (NCTE, 2022).

Teaching Attitude, Motivation, Professional Commitment, Job Satisfaction यह ढाँचा दर्शाता है कि

शिक्षण अभिवृत्ति शिक्षक की प्रेरणा को प्रभावित करती है, जो आगे चलकर पेशागत प्रतिबद्धता एवं कार्य–संतुष्टि को सुदृढ़ करती है।

शैक्षिक निहितार्थ

यह अध्ययन शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों, शैक्षिक प्रशासन तथा विद्यालय प्रबंधन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण शैक्षिक संकेत प्रस्तुत करता है। अध्ययन के निष्कर्ष दर्शाते हैं कि यदि शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति, प्रेरणा और कार्य–संतुष्टि को सुदृढ़ करना है, तो इसकी शुरुआत शिक्षक–प्रशिक्षण स्तर से ही की जानी चाहिए। बी.एड. पाठ्यक्रम में अभिवृत्ति विकास, आत्म–परावर्तन (Self Reflection), भावनात्मक बुद्धि, तथा मानसिक स्वास्थ्य एवं कल्याण से संबंधित घटकों को सशक्त रूप से सम्मिलित करना आवश्यक है, ताकि भावी शिक्षक पेशागत चुनौतियों का सकारात्मक दृष्टिकोण से सामना कर सकें NEP 2020 (Sharma & Verma, 2022)।

शैक्षिक प्रशासन के स्तर पर यह आवश्यक है कि कार्य–परिस्थितियों में सुधार, निरंतर पेशागत विकास (CPD) के अवसर, तथा प्रोत्साहन एवं मान्यता प्रणाली को सुदृढ़ किया जाए, जिससे शिक्षकों की पेशागत प्रतिबद्धता और संगठनात्मक निष्ठा में वृद्धि हो सके (OECD, 2023)। इसके अतिरिक्त, विद्यालय स्तर पर सहयोगात्मक कार्य–संस्कृति, सकारात्मक एवं सहभागी नेतृत्व, तथा पारदर्शी प्रशासनिक नीतियाँ शिक्षकों में सुरक्षा, सम्मान और संतोष की भावना को बढ़ाती हैं (UNESCO, 2024)।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अवधारणात्मक अध्ययन से यह स्पष्ट रूप से निष्कर्ष निकलता है कि बी.एड. प्रशिक्षित अध्यापकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति उनकी कार्य–संतुष्टि का एक प्रमुख और निर्णायक निर्धारक है। शिक्षण के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति अध्यापकों में आंतरिक प्रेरणा, आत्म–विश्वास, पेशागत प्रतिबद्धता तथा कार्य के प्रति संतोष की भावना को सुदृढ़ करती है, जिसके परिणामस्वरूप वे अपने शिक्षण दायित्वों का निर्वहन अधिक प्रभावशीलता एवं समर्पण के साथ करते हैं। इसके विपरीत, नकारात्मक शिक्षण अभिवृत्ति अध्यापकों में तनाव, कार्य–थकान, उदासीनता एवं पेशागत असंतोष को जन्म देती है, जो न केवल उनकी व्यक्तिगत कार्य–संतुष्टि को प्रभावित करती है, बल्कि विद्यालय की समग्र शैक्षिक गुणवत्ता पर भी प्रतिकूल प्रभाव डालती है।

अध्ययन यह भी इंगित करता है कि बी.एड. प्रशिक्षण शिक्षण के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, क्योंकि यह प्रशिक्षण अध्यापकों में पेशागत मूल्यों, शिक्षण कौशल, प्रतिबिंबात्मक सोच तथा आत्म–मूल्यांकन की क्षमता का विकास करता है। प्रस्तुत अवधारणात्मक ढाँचा यह दर्शाता है कि शिक्षण अभिवृत्ति प्रेरणा और पेशागत प्रतिबद्धता के माध्यम से कार्य–संतुष्टि को प्रभावित करती है।

अंततः यह अध्ययन शिक्षा–नीति निर्माताओं, शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थानों एवं शैक्षिक प्रशासकों के लिए उपयोगी सैद्धांतिक आधार प्रदान करता है। भविष्य में इस क्षेत्र में अनुभवजन्य (Empirical) शोध की आवश्यकता है, जिससे विभिन्न जनांकिकीय एवं संस्थागत चरों के संदर्भ में शिक्षण अभिवृत्ति और कार्य–संतुष्टि के संबंधों का गहन परीक्षण किया जा सके।

संदर्भ सूची

1. अख्तर, एस. एवं मलिक, आर. (2022) माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षण अभिवृत्ति का शिक्षक प्रेरणा पर प्रभाव. *Journal of Educational Research*, 18(1), 34–47।
2. चौधरी, आर. (2024) शिक्षक अभिवृत्ति एवं कक्षा प्रभावशीलता. *Journal of Education Studies*, 12(2), 45–58।
3. कौर, पी. (2021) शिक्षकों में शिक्षण अभिवृत्ति एवं कार्य–संतुष्टि. *International Journal of Educational Psychology*, 6(1), 33–41।

4. कुमार, ए. एवं सिंह, पी. (2021) शिक्षक शिक्षा एवं पेशागत विकासः समकालीन दृष्टिकोण. *Journal of Education & Practice*, 12(8), 45–53।
5. कुमार, एस. एवं शर्मा, आर. (2021) शिक्षक शिक्षा एवं पेशागत अभिवृत्ति. *Indian Journal of Teacher Education*, 10(1), 21–30।
6. ली, एक्स. एवं चेन, वाई. (2023) शिक्षक प्रेरणा एवं पेशागत प्रतिबद्धताः एक संरचनात्मक विश्लेषण. *International Journal of Teacher Development*, 11(3), 112–126।
7. मेहता, आर. एवं राव, एस. (2024) बी.एड. प्रशिक्षण का शिक्षकों की कक्षा–प्रथाओं एवं कार्य–संतुष्टि पर प्रभाव. *International Journal of Teacher Education*, 9(2), 78–92।
8. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020.* शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली।
9. राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद् (2022) शिक्षक शिक्षा हेतु राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा. राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद्, नई दिल्ली।
10. ओईसीडी (2023) *मूल्यवान पेशेवर के रूप में शिक्षक एवं विद्यालय नेतृत्व.* OECD Publishing, पेरिस।
11. ओईसीडी (2023) *शिक्षक एवं विद्यालय नेतृत्वः शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार.* OECD Publishing, पेरिस।
12. शर्मा, एल. एवं वर्मा, डी. (2022) शिक्षक अभिवृत्ति, कल्याण एवं पेशागत प्रभावशीलता. *Journal of Teacher Education Research*, 14(2), 67–81।
13. शर्मा, एल. एवं वर्मा, डी. (2023) शिक्षक शिक्षा में पेशागत नैतिकता एवं सतत् पेशागत विकास. *Education Today*, 15(4), 112–121।
14. सिंह, ए. एवं मिश्रा, पी. (2022) विद्यालय शिक्षकों में कार्य–संतुष्टि एवं पेशागत प्रतिबद्धता. *Journal of Educational Studies*, 14(2), 45–58।
15. सिंह, पी. एवं गुप्ता, ए. (2024) विद्यालय शिक्षकों में कार्य–संतुष्टि के पूर्वानुमानकः प्रेरणा एवं प्रतिबद्धता की भूमिका. *Education and Society*, 20(2), 59–75।
16. यूनेस्को (2024) *गुणवत्तापूर्ण शिक्षा हेतु शिक्षक नेतृत्व की पुर्नकल्पना.* UNESCO Publishing, पेरिस।
17. यूनेस्को (2024) *शिक्षक कल्याण एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा.* UNESCO Publishing, पेरिस।
18. वर्मा, आर. एवं सिंह, एन. (2023) शिक्षण अभिवृत्ति एवं कक्षा प्रभावशीलता. *International Journal of Education and Psychology*, 8(1), 33–42।

****